

दीनदयाल जी ने निर्धनों के उत्थान के लिए 'एकात्म मानववाद' का दर्शन दिया। देश भर में कार्यकर्ताओं को दिशा प्रदान करने का उत्तरदायित्व उन्होंने निभाया।

“भारतीय संस्कृति  
एकात्म मानववादी है। वह  
संपूर्ण जीवन का, संपूर्ण सृष्टि  
का संकलित विचार करती है,  
टुकड़ों में नहीं। हम अनेकता में  
एकता को खोजते हैं। यह विचार  
पश्चिमी संस्कृति से भिन्न है।  
हम व्यक्ति के सुख का नहीं  
समाज के सुख का  
विचार करते हैं।